



कामधेनु किसान मित्रान छत्तीसगढ़ कामधेनु विश्वविद्यालय कृषि विज्ञान केन्द्र अंजोरा, दुर्ग



अंक-3

वेबसाइट : www.kvkducg.org
जनवरी - मार्च 2015

वर्ष-2



संरक्षक

प्रो. उमेश कुमार मिश्र

माननीय कुलपति

छ.ग. कामधेनु विश्वविद्यालय

पेरणा ख़ोत

डॉ. अनुपम मिश्रा

आंचलिक परियोजना

निदेशक जोन-7

(भा.कृ.अनु.परि.) जबलपुर

मार्ग दर्शक

डॉ. पी. एल. चौधरी

निदेशक विस्तार सेवाएं

छ.ग. कामधेनु विश्वविद्यालय

पधान संपादक

डॉ. डी. भोसले

कार्यक्रम समन्वयक

कृ.वि.के. अंजोरा, दुर्ग

संपादक

डॉ. एस.के. थापक

विषय वस्तु विशेषज्ञ

कृ.वि.के. अंजोरा

सह संपादक

श्री यू.के. पटेल

श्री रोशन साहू

श्रीमती सोनिया खलसो

कृषि विज्ञान केन्द्र, अंजोरा दुर्ग में गणतंत्र दिवस का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, अंजोरा दुर्ग में गणतंत्र दिवस कार्यक्रम का गरिमामय आयोजन किया गया। इस अवसर पर ध्वजारोहण छत्तीसगढ़ कामधेनु विश्वविद्यालय के नवनियुक्त निदेशक विस्तार सेवाएं, डॉ. पी.एल. चौधरी द्वारा किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. पी.एल. चौधरी द्वारा अपने संबोधन में कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा छत्तीसगढ़ कामधेनु विश्वविद्यालय में अपना स्थानांतरण पश्चात् बहुत कम समय में की गई प्रगति की भूरी-भूरी प्रशंसा की। उन्होंने यहां कार्यरत स्टाफ एवं श्रमिकों को और अधिक लगन एवं मेहनत कर कृषि विज्ञान केन्द्र, अंजोरा दुर्ग को देश में सर्वश्रेष्ठ बनाने हेतु आह्वान किया। कृषि विज्ञान केन्द्र, अंजोरा दुर्ग के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. धीरेन्द्र भोसले द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा की जा रही विस्तार एवं विकास गतिविधियों की जानकारी दी। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. एस.के. थापक एवं आभार प्रदर्शन कु. हेमलता विषय वस्तु विशेषज्ञ द्वारा किया गया। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र, अंजोरा दुर्ग के समस्त स्टाफ एवं श्रमिकों के अतिरिक्त अन्य गणमान्य नागरिक भी उपस्थित थे।



कृषि विज्ञान केन्द्र, अंजोरा दुर्ग में मशरूम बीज उत्पादन ईकाई प्रारंभ :

दुर्ग जिले में कृषकों द्वारा मशरूम उत्पादन हेतु रूचि ली जा रही है। विभिन्न महिला समूहों द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र दुर्ग के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त कर मशरूम उत्पादन किया जा रहा है। किन्तु उन्हें मशरूम बीज (स्पोन) हेतु इधर-उधर भटकना पड़ता था जिसकी आवश्यकता अब नहीं पड़ेगी क्योंकि मशरूम बीज उत्पादन इस केन्द्र द्वारा प्रारंभ कर दिया गया है।

कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. धीरेन्द्र भोसले ने बताया कि मशरूम उत्पादन कर बहुत ही कम लागत एवं श्रम के द्वारा अच्छा लाभ कमाया जा सकता है। इसके उत्पादन हेतु पैरे की आवश्यकता होती है जो कि सरलता से उपलब्ध है। मशरूम उत्पादन के पश्चात उपयोग में लाया गया पैरा पशुओं के लिए अति उत्तम चारा भी होता है, जिससे पशुओं की उत्पादन क्षमता बढ़ती है।

कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक एवं मशरूम प्रभारी डॉ. एस.के. थापक ने बताया कि मशरूम उगाने हेतु बीज एक महत्वपूर्ण अवयव है, जिसका बीज उत्पादन अब कृषि विज्ञान केन्द्र, अंजोरा दुर्ग में प्रारंभ कर दिया गया है, जो कि बिक्री हेतु इस केन्द्र में उपलब्ध है।



विगत तीन माह की गतिविधियां एवं प्रस्तावित गतिविधियां



कृषकों एवं ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

विगत तीन माह की गतिविधियां			आगामी तीन माह की गतिविधियां		
संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	अवधि	संभावित प्रशिक्षणार्थी
15	15	497	28	28	840



ग्रामीण युवाओं के लिए प्रशिक्षण

विगत तीन माह की गतिविधियां			आगामी तीन माह की गतिविधियां		
संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	अवधि	संभावित प्रशिक्षणार्थी
02	02	64	03	03	100



सेवारत विस्तार कर्मियों हेतु प्रशिक्षण

विगत तीन माह की गतिविधियां			आगामी तीन माह की गतिविधियां		
संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	अवधि	संभावित प्रशिक्षणार्थी
02	02	49	03	03	90



प्रक्षेत्र दिवस कार्यक्रम

विगत तीन माह की गतिविधियां			आगामी तीन माह की गतिविधियां		
संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	अवधि	संभावित प्रशिक्षणार्थी
02	02	79	01	01	50



विस्तार गतिविधियां

क्र.	विषय	विगत तीन माह	आगामी तीन माह
1	मासिक कार्यशाला	03	03
2	वैज्ञानिकों का प्रक्षेत्र भ्रमण	20	15
3	कृषकों द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र का भ्रमण	10	10
4	प्रसार पत्रिका / लेख	06	04
	कुल	39	32



प्रक्षेत्र परीक्षण कार्यक्रम

क्र.	शीर्षक	क्षेत्रफल/हे	लाभान्वित कृषक
1	टमाटर में फलछेदक नियंत्रण कीट हेतु गेंदों की अन्तरवर्ती फसल प्रभाव का आंकलन	06	1.2
2	बैंगन में विल्ट प्रबंधन हेतु ट्राईकोडर्मा एवं स्ट्रेप्टोसाइक्लिन के प्रभाव का आंकलन	06	1.0
3	चना फसल में मालिब्डेनम एवं राजजोबियम एवं स्ट्रेप्टोसाइक्लिन के प्रभाव का आंकलन	04	1.8
4	टपक सिंचाई विधि से चने की उन्नतशील किस्म का आंकलन	04	1.6
5	गेंहू की उन्नतशील किस्मों का कतार बोनी से आंकलन	04	1.6
6	चने में कॉलर रॉट रोग नियंत्रण हेतु फंफूद नाशकों का पुनः आंकलन	04	1.6
	कुल	27	7.8



अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	शीर्षक	लामान्वित कृ.	क्षेत्रफल/हे
1	पत्ता गोभी में डायमंड बैकमोथ नियंत्रण हेतु करटाप हाइड्रोक्लोराईट का प्रभाव	10	4.8
2	गेंहू में समन्वित पोषण प्रबंधन का प्रदर्शन	12	4.8
3	चना में समन्वित पोषण का प्रदर्शन	12	4.8
4	तिवड़ा में भभूतिया रोग के विरुद्ध रोग रोधी किस्म का प्रदर्शन	12	4.8
5	तिवड़ा की कतार में सीधी बुआई का प्रदर्शन	10	4.8
	कुल	56	56



फार्म स्कूल प्रारंभ

आत्मायोजनांतर्गत ग्राम कचांदुर में कृषक श्री भुजवल यदु का चयन एचीवर फार्मर के रूप में किया गया। जिनके डेयरी फार्म में फार्म स्कूल का शुभारंभ किया गया, योजनांतर्गत 25 कृषकों को छःबार उन्नत डेयरी संचालन हेतु वैज्ञानिकों, पशु पालन विशेषज्ञों एवं एचिवर फार्मर द्वारा प्रशिक्षण दिया जावेगा। उक्त प्रशिक्षण दिनांक 24.02.2015 एवं 03.03.2015 को दिया गया।



विभिन्न कद्दूवर्गीय सब्जियों की खेती का विवरण

क्रं.	नाम	बीज दर (कि./हे.)	कतार से कतार की दूरी (मी.)	पौधे से पौधे की दूरी (से.मी.)	नत्रजन (क्वि./हे.)	स्फुर (क्वि./हे.)	पोटाश (क्वि./हे.)	औसत उपज (क्वि./हे.)
1	चिकनी तोरई	3.5-5.0	2.5-3.5	60-90	50	60	60	200-250
2	धारीदार तोरई	5.0-2.5	2.5-3.5	60-90	50	60	60	200-250
3	कद्दू	4.0-6.0	3.0-4.0	75-80	50	60	60	300-400
4	लौकी	3.5-4.0	2.5-3.5	60-90	80	60	60	250-300
5	पेठा	5.0-6.0	2.5-3.5	60-90	50	50	50	300-350
6	करेला	6.0-7.0	1.0-2.0	50-60	70	50	50	100-150
7	खीरा	1.5-2.0	1.0	50	60	40	40	100-150
8	ककड़ी	2.0	1.0	50-60	60	40	40	100-150
9	टिण्डा	5.0	0.6-1.5	40-50	50	50	50	100-130
10	खरबूज	2.0-2.5	1.5-2.0	60	80	60	60	150-200
11	तरबूज	4.0-5.0	2.5-3.5	90-100	80	60	60	300-350

जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर एवं भारतीय कृषि अनुशांधान परियोजना नई दिल्ली के वैज्ञानिकों द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र दुर्ग का भ्रमण



समसामयिक सलाह

जनवरी

शास्त्रविज्ञान

- समय से बोये गये गेहूँ में 20-25 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।
- फ़ीफ्ट जड़ अवस्था में नत्रजन डालें तथा एक माह बाद नींदा नियंत्रण करें।
- चना, मटर, मसूर, अलसी में फूल आने के पूर्व सिंचाई करें।
- गन्ने की शीतकालीन में सिंचाई करें।

उद्यानिकी

- टमाटर की फसल में अच्छी फलत के लिए लकड़ी लगाकर सहारा दें।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों के शीघ्र अंकुरण के लिये बीज को प्लास्टिक की थैली में लगाकर पाली हाऊस में रखें।
- जनवरी माह में टमाटर के पौधों को रोपने से अप्रैल माह में फल मिलना शुरू हो जाता है जिससे बाजार मूल्य अधिक मिलता है।
- गुलाब में रोज मित्बर 15-15 दिन के अंतराल में अवश्य दें।

मृदाविज्ञान

- गेहूँ की फसल में नत्रजन की शेष आधी मात्रा डालकर सिंचाई करें।
- गेहूँ की दरी से बुवाई की स्थिति में बीज की मात्रा 25 प्रतिशत बढ़ा दें तथा उर्वरकों में नत्रजन की मात्रा 120 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर दें।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों की फसल के लिए खेत तैयारी की अंतिम जुताई के समय 20-25 टन गोबर खाद प्रयोग करें।
- बैंगन की दशी किस्में में रोपाई के 20 दिन बाद 20 कि.ग्रा. नत्रजन तथा संकर किस्मों में 30 कि.ग्रा. नत्रजन प्रति हेक्टेयर डालकर सिंचाई करें।

पौध संरक्षण

- मटर, मसूर, लाखड़ी, अलसी इत्यादि में मसूतियाँ रोग आने की स्थिति में खड़ी फसल में कैरोथेन नामक दवा की 1 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर फसल पर 15 दिन के अंतराल पर दो से तीन छिड़काव करें।
- चना में कालर रॉट रोग आने की स्थिति में सिंचाई से पूर्व टैबूकोनाजोल (फालीक्ज़ूर) नामक दवा की 200 मिली मात्रा प्रति एकड़ के हिसाब से मिट्टी की ड्रेविंग करें।
- चना में इल्लो आने की दशा में एण्डॉक्साकार्ब 14.5 ई.सी. नामक दवा की 100 ग्राम मात्रा प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें।

पशुपालन एवं चारा उत्पादन

- पशु शालाओं में पशुओं को ठंड से बचाने के लिए पर्दों की व्यवस्था करें।
- पशुओं के नवजात बच्चों विशेष रूप से सूकर एवं बकरी के बच्चों को ठंड से बचाने के लिए सूखे विछावन, बल्ब अथवा सिगाड़ी की व्यवस्था करें।
- पशियों के चूने के ब्रूडिंग तापक्रम (ग्रथम सप्ताह 97 डिग्री स.ग्रे. से प्रति सप्ताह 3 डिग्री स.ग्रे. की दर से घटाना है) का विशेष ध्यान रखें। यदि चूने एक स्थान पर एकत्र हो तो अतिरिक्त गर्मी प्रदान करने की व्यवस्था करें।
- हरे चारे जैसे बरसीम लूसर्न की कटाई कर पशुओं को खिलाएँ।

फरवरी

शास्त्रविज्ञान

- गेहूँ फसल में कन्से तथा गांठ बनने की अवस्था में सिंचाई करें।
- चने में दाने भरने की अवस्था में सिंचाई करें।
- माह अक्टूबर नवम्बर में बोई गईं दलहनी फसलों की कटाई करें।
- जनवरी में बोई गई फसलों में सिंचाई व गुड़ाई करें।
- गेहूँ की फसल में सिंचाई करें तथा असिंचित अवस्था में 2-3 प्रतिशत यूरिया घोल छिड़काव करें।
- शीतकालीन गन्ने में निंदाई-गुड़ाई कर सिंचाई करें।

उद्यानिकी

- फलदार वृक्षों जैसे- आम, आंवला, चीकू, कटहल, आदि में फूल एवं फल आते समय सिंचाई बंद रखें।
- केला एवं पीपता लगाने की तैयारी करें।
- अदरक, हल्दी एवं कंद वर्गीय फसलों की खुदाई करें।
- कद्दूवर्गीय फसलों की बुवाई एवं पहले से तैयार पौधों की रोपाई करें।
- ग्रीष्मकाल के प्रारंभ में फूल प्राप्त करने के लिए गेंदों की बुवाई करें।

मृदाविज्ञान

- शरदकालीन गन्ने में नत्रजन युक्त (यूरिया), उर्वरक की एक चौथाई मात्रा देकर सिंचाई करें।
- ग्रीष्मकालीन फसल हेतु मूंग, उड़द, सूरजमुखी फसल के लिए खेत की तैयारी मृदा को अच्छी तरह मसूरी करें।
- ग्रीष्मकालीन मक्का की बुवाई हेतु मक्का को ऐंजोटोबेक्टर 5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज एवं पी.एस.बी. कल्चर 10 ग्राम प्रति कि.ग्रा. की दर से बीजोपचार करें।

पौध संरक्षण

- सरसों में मसूतिया या चूर्णी फफूंदी रोग आने की दशा में सल्फेक्स 3 ग्राम या डिनोकेप 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- टमाटर, आलू में फछेटी-अंगमारी रोग होने पर मेंटालेकजल 1.5 ग्राम या सायमॉक्सीन 2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- मटर, गेहूँ में गेरुवा रोग दिखने पर ट्राइएडीमीफॉन 200 मि.ली. दवा प्रति एकड़ छिड़काव करें।
- ग्रीष्मकालीन फसलों की बुवाई पूर्व दीमक बचाव हेतु क्लोरपायरीफास 1.5 प्रतिशत चूर्ण की 10 किलो मात्रा प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें।

पशुपालन एवं चारा उत्पादन

- पशुओं में एंथेक्स रोग संक्रमण वाले इलाकों में पालतू पशुओं को एंथेक्स का टीकानिकट के पशु चिकित्सालय / औषधालय से संपर्क कर लवाएँ।
- अगर्भित भैसों के गर्भाधान पर विशेष ध्यान दें।
- हरा चारा सुखाकर 'हे' तैयार करें।
- हरा चारा कटाई के पश्चात् 20-25 कि.ग्रा. नत्रजन प्रति हेक्टेयर की मात्रा दे कर सिंचाई करें।

मार्च

शास्त्रविज्ञान

- इस माह में मूंग एवं तिल की बुवाई कर सकते हैं।
- पकी फसल की कटाई कर खलिहान में गहाई करें तथा सुखाकर भण्डारण करें।
- फसल काटने के बाद यदि खेत में नमी हो तो खाली खेत में मिट्टी फलटने वाले हल से जुताई करें।

उद्यानिकी

- आम, आंवला, चीकू में फल विकसित होने का समय है अतः इन वृक्षों में 8-10 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।
- टमाटर, बैंगन, मिर्च, पिण्डी आदि फसलों में निंदाई गुड़ाई कर सिंचाई करें।
- प्याज की तैयार फसल की खुदाई से 10 से 15 दिन पहले पानी देना बंद कर दें।
- पत्तियाँ पीली पड़ने पर कंदों की खुदाई करें तथा धूप में सुखायें।

मृदाविज्ञान

- जायद मूंग उड़द की बुवाई हेतु बुवाई पूर्व 20 कि.ग्रा. नत्रजन एवं 30 कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें एवं बीज को राइजोबियम कल्चर 5 ग्राम तथा पी.एस.बी. कल्चर 10 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित कर बुवाई करें।
- गन्ने की बुवाई करते समय 120:60:40 प्रति हेक्टेयर के हिसाब से उर्वरक का प्रयोग करें।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों की बुवाई करते समय अंतिम जुताई के समय लगभग 20-25 टन गोबर की खाद तथा बुवाई पूर्व 30:40:40 एन.पी.के. प्रति हेक्टेयर की दर से उर्वरक की मात्रा दें।

पौध संरक्षण

- ग्रीष्म कालीन धान की धान में तनाछेदक का प्रकोप होने पर फिफेनोथल 8से 10किलो या कर्टाप या कार्बोपयूरान 10 से 12 किलो प्रति एकड़ प्रयोग करें।
- ग्रीष्मकालीन धान में पर्णच्छद अंगमारी (शीथ ब्लाइट) रोग के लक्षण दिखते ही
- कटहल में फल गलन से बचाव हेतु डायथेन एम-45 0.25 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों को कीड़ों से बचाव हेतु प्रकाश प्रपंच का प्रयोग करें या कार्बोरिल डस्ट 10 से 12 किलो का छिड़काव करें।

पशुपालन एवं चारा उत्पादन

- ग्रीष्म ऋतु में हरा चारा प्राप्त करने हेतु एम.पी.चेरी, हाइब्रिड नेपियर (मल्टी कट) आदि चारा फसलों की बुवाई करें।
- पशु शालाओं में पशुओं को ठंड से बचाने के लिए लगाएँ गए पर्दे उतारकर रखें।
- हरा चारा सुखाकर 'हे' तैयार करें।
- भेड़-बकरियों के लिए चना-मूसा, अरहर-मूसा इत्यादि का संग्रहण करें।

प्रेषक :

कार्यक्रम समन्वयक

कृषि विज्ञान केन्द्र, अंजोरा दुर्ग

दूरभाष क्रमांक 0788- 2623461, 3292046

कामधेनु किसान मितान की सदस्यता शुल्क 30 / रु. वार्षिक कार्यालय में जमा करें

बुक पोस्ट

सेवा में,
श्री / श्रीमती / डॉ.